अध्याय तृतीय
विभिन्न चित्रों से सम्बन्धित मातृ–देवी

बहुचित्रित पट्टिकाओं पर उकेरे गये सभी मूर्ति रूपों में मातृ–देवी के चित्र के साथ–साथ मनुष्यों, जन्तुओं और देवताओं के चित्र भी हैं ऐसी बहुचित्रित पट्टिकायें आन्ध्र–प्रदेश, महाराष्ट्र, कर्नाटक और गुजरात से मिली हैं परन्तु उत्तर–प्रदेश में ऐसी बहुचित्रित पट्टिकायें नहीं मिलती हैं। जैरामस्वामी वदगाँव सतारा जिला महाराष्ट्र से प्राप्त उत्तानपाद प्रारूप–1 (चित्र–73) ही मातृ–देवी का एकमात्र ऐसा चित्र है जिसमें देवी के साथ एक साड़ विनम्र भाव में बैठा है। कमल शीर्ष प्रारूप–2, प्रारूप–3, तथा मानवोचित प्रारूप–4 में भी एक सॉड़ और एक भक्त था। एक सॉड़, एक भक्त, एक लिंग और एक सिंह मुख भी चित्रित है (चित्र–99)। एक अन्य उदाहरण में साड़, भक्त, लिंग, सिंह मुख के साथ–साथ एक शंख भी चित्रित है (चित्र–102) सम्भवतः बदगाँव के ये प्रारूप चौथी शताब्दी ई0 या उसके पहले की है।

प्रारूप–4 बहुचित्रित पट्टिकाओं में मातृ–देवी का मानवोचित रूप :

मानव प्रतिरूप

एलोरा के रामेश्वर स्थल से हिन्दू पहाड़ी के मन्दिर के कटे अहाते में एकात्मक पत्थर के चबूतरे पर शिव का बैल, नन्दी की एक बैठी हुई प्रतिमा है। ठोस चबूतरी के दक्षिण पश्चिम में गुफा की तरफ मातृ–देवी की प्रारूप–4 की प्रतिमा उकेरी गयी है (चित्र 75) चबूतरे पर बैठे हुए बैल के पिछले पाँव के पीछे देवी की प्रतिमा हैं प्रतिमा छत–विक्षत है लेकिन देवी की उत्तानपाद मुद्रा सुस्पष्ट है, देवी अल्थी–पल्थी मारकर बैठी प्रतीत होती

है। देवी के दो स्त्री सेविकायें हैं जिनके पास उड़ते हुए बाल हैं चट्टान के फटे हुए भाग के बीच उकेरे गये हैं। देवी की आधुनिक या परम्परागत व्याख्यायें पार्वती से मिलती हैं।

वर्गेश एलोरा का दूसरा प्राचीन नाम वेरुल लिपिबद्ध करते हैं।[1] धेरे व्याख्या करते हैं कि बेरुल या पात्र योनि या गर्भ के प्रतीक के रूप में दक्षिण भारत में प्राचीन समय में पूजा जाता था जो बाद में देवी के रूप में पूजा गया वही वेरुल रेणुका का प्रतीक है वह नदी जो एलोरा से होकर बहती है, वेरुल नदी जिसे एल गंगा भी कहा जाता हैं एक ऐसा नाम जो कि पृथ्वी की योनि है।[2] मातृ–देवी की प्रतिमा पर लागू होता है। इन नामों के समूह का मिश्रण पात्र के योनि के और एलोर–21 मातृ–देवी की प्रतिमा के आन्तरिक सम्बन्ध के प्रतीक की तरफ सुझाव देता है।[3] शताब्दियों तक यह नाम मातृ–देवी पर लागू होता रहा लेकिन यह प्रतिमा उत्पादन के प्रतीक का लक्षण कभी नहीं खोया। शायद एलोरा का रामेश्वर मन्दिर उत्पादन आराधना का केवल एकमात्र केन्द्र था जैसे बाद के ऐहोल के निकट सिद्धानकोला का चालुक्य मन्दिर उत्पादन आराधना का केन्द्र था। दोनों शैव आराधना के पशुपति सम्प्रदाय के समर्पित हैं।

एलोरा 21 में देवी के रूप की तरह गुजरात में बहुसंख्यक इसी तरह के देवी के रूप पाये गये हैं। देवी को मनुष्योचित आकार के रूप में मानने वाले सिद्धानत प्रारूप–4 जो कि छोटे मानव सिर वाली एलीफैन्टा द्वीप (चित्र–76) में पाये जाते हैं। दोनों पत्थर के कटे हुए मन्दिर एलोरा–21 और एलीफैन्टा–1, 550 ई0 कलुचुरि काल के माने जाते हैं।[4] एक छोटे और भिन्न रूप से व्यवस्थित प्रतिरूप में एलीफैन्टा के प्रस्तर पट्टिकाओं में एलोरा–21 की तरह देवी के साथ साड़ तथा भक्त का अंकन भी है। ऐलीफैन्टा चित्र में देवी अपने हाथ में बिना कमल कलिकाओं के ही अपने हाथ सिर के दोनों तरफ उठाये एलीफैन्टा का यह भित्ति चित्र छठी शताब्दी का प्रतीत होता है।[5] इस भित्तिचित्र में देवी

ने एक विशेष प्रकार का मुकुट धारण कर रखा है जिसके दोनों छोर पर उभार है, देवी के पैर स्पष्ट रूप से पट्टिका के पीछे की ओर झुके हुए हैं।

पश्चिमी महाराष्ट्र के एलोरा और एलीफैन्टा की ये दोनों तस्वीरें गुजरात की प्रारूप–4 मानव सिरयुक्त की बहुसंख्यक बहुचित्रित पट्टिका के समान है, जैसे गुजरात के प्रारूप–4 की बहुचित्रित पट्टिका अब भुज के कक्ष के म्यूजियम में है जो काले पत्थरों पर उकेरे गये हैं। देवी के बाँयी तरफ सॉड़ और दायी तरफ भक्त है (चित्र–77) मानव सिर युक्त देवी के हाथ सिर के दोनों तरफ उठे हैं और हाथ खाली है। इसे चौथी से पाँचवीं शताब्दी ई0 का माना जा सकता है। इसमें साड़ ऊपर से दिखायी पड़ता है और भक्त सामने दिखायी पड़ते हैं जबकि मातृ–देवी से सम्बन्धित सॉड़ ढलुआ है लेकिन भक्तों की तरह खड़ा है।

भिनमल (जालौर जिला राजस्थान) से एक पत्थर की प्रारूप–4 की बहुचित्रित पट्टिका मिली है जिसे यू0पी0 शाह ने सातवीं शताब्दी ई0 का माना है इस पट्टिका में मानव सिर युक्त देवी के उठे हुए हाथों में कमल की कलिया है (चित्र–78)।[6] ठीक दाहिने तरफ सॉड़ के ऊपर शिवलिंग है जो कि भिन्न रूप से प्रस्तुत किया गया है। समुचित बाँया क्षेत्र लुप्त प्रायः है।

कमलवत सिर प्रारूप–3 देवी की एक पकी हुई मिट्टी की पट्टिका (गुजरात के सूरत जिले) के कनाद स्थल की है (चित्र–79) यह गुजरात से मातृ–देवी की एकमात्र पकी मिट्टी की पट्टिका है, इसमें एक सेविका मातृ–देवी के दाहिने तरफ है एक साड़ बाँयी तरफ झुका है, मातृ–देवी एक खिले हुए कमल का सहारा लिए हुए है, इस पट्टिका की तिथि निर्धारण छठी शताब्दी हो सकता है।

कमलवत सिरयुक्त प्रारूप–3 देवी की एक पट्टिका (गुजरात के पंचमहल जिले) के बवाका स्थल की है (चित्र 80) विशालकाय कमलवत सिरयुक्त स्त्री हल्के हरे प्रकाश से

युक्त पतली चट्टान की पट्टिका के साथ है, और पट्टिका के दाहिने तरफ झुका हुआ साड़ और बाँयी तरफ आराधना की मुद्रा में झुकी हुई स्त्री है देवी एक स्तरीय आभूषण पहनती है और अपने हाथों में कमल का फूल पकड़ी है। इस पट्टिका को वी0एच0 सोनवाने ने खोज निकाला है।[7] सोनवाने ने इस पट्टिका का तिथि निर्धारण दशवीं शताब्दी से 11 वीं शताब्दी ई0 का मानते हैं।

इस प्रकार कनाड, बवाका, और एलोरा के प्रारूप–4, इन सबमें मातृ–देवी की सेविकायें स्पष्टतः केवल स्त्रियाँ हैं जबकि अन्य प्रारूपों के उदाहरणों में वे पुरूष प्रतीत होते है।

मातृ–देवी की बहुत सी प्रतिमाएँ तालाबों की दीवारों पर पायी जाती हैं। इस प्रकार के उदाहरण गुजरात से और कर्नाटक में एहोल से मिलते हैं। सीढीनुमा तालाब के दीवारों पर मानव सिरयुक्त प्रारूप–4 मातृ–देवी धानक स्थल (गुजरात, राजकोट जिला) से मिलती है, जिसमें देवी अपने हाथों में कमल का फूल पकड़े हैं और देवी के बाँये तरफ एक झुकी हुई पूजा करती हुई आकृति है (चित्र–81)।[8] देवी के दाहिने तरफ एक लिंग और एक साड़ ऊपर दिखाई पड़ता है। इसकी तिथि सातवीं शताब्दी ई0 निर्धारित की जा सकती है।

एक दूसरा प्रस्तर चौखट धानक सीढ़ीदार कुँआ की दीवार पर उकेरे गये हैं। यह भी मनुष्योचितरूप प्रारूप–4 की तरह है इसे भी सातवीं शताब्दी का माना जाता है (चित्र–82)।[9] देवी ने अपने सिर के दोनों ओर कमल पुष्प धारण कर रखा है। देवी के दाहिने तरफ जो कुछ था वह अब नष्ट हो चुका है लेकिन बायीं ओर घुटनों के बल पर बैठी हुई एक महिला भक्त है, भक्त के ऊपर भगवान गणेश चित्रित हैं। गणेश का जुड़ाव यहाँ पर शैव परिकल्पना के अनुरूप है। पौराणिक मान्यता के अनुसार उनका प्रभावी सम्बन्ध शिव और पार्वती से है। इस धंक मातृ–देवी की प्रतिमाएँ लम्बवत् अवस्था में पल्थी मारकर

बैठी हुई अंकित मिलती है लेकिन बहुसंख्यक प्रतिमाओं का प्रस्तुतीकरण उत्तानपाद के रूप में मिलता है।

नन्दा देवी के मन्दिर के निकट एक चट्टान पर पाँच गौरियों की मूर्ति उकेरी गयी हैं, पाँच गौरियों में से एक पार्वती का रूप है। राजस्थान के अर्नास्थल से प्रारूप–4 मनुष्योचित की प्रतिमा मातृ–देवी अपने सिर तक अपने हाथों में कमल पकड़े हुए हैं (चित्र–85)। देवी से थोड़ा अलग देवी के दाहिने तरफ गणेश की एक प्रतिमा उकेरी गयी है। गणेश के साथ मातृ–देवी की इस सम्बन्ध की प्रतिमाएँ आन्ध्र–प्रदेश में पायी गयी पट्टिकाओं में ज्यादा सामान्य है अपेक्षाकृत अन्य स्थल पर पायी गयी पट्टिकाओं से गणेश विघ्न विनाशक बाधाओं को दूर करने वाले पार्वती और शिव के पुत्र हैं। एक सर्प देवी के शरीर के निचले भाग पर उकेरा गया है। आर0सी0 अग्रवाल इस प्रकार की प्रतिमाओं की तिथि 9 वीं शताब्दी ई0 निर्धारित करते हैं।[10]

मातृ–देवी की एक प्रतिमा गुजरात के पंचमहल जिला के टारसंग इस स्थल से मिलती है (चित्र–86)।[11] एक छत–विक्षत भूरी पतली पट्टिका के केन्द्र में प्रारूप–4 मानव सिरयुक्त मातृ–देवी स्थित है, देवी के दाहिने तरफ एक लिंग है और बांयी तरफ भक्त हैं, जो झुके हुए अंजली मुद्रा में देवी की आराधना कर रहा है। पट्टिका का निचला दाहिना भाग खो गया है लेकिन सांड़ लिंग के सामने है। पट्टिका के ऊपरी दाहिने तरफ श्रीपद 'पवित्र पैर' के ऊपर एक त्रिशूल है, जो विश्वास का प्रतीक है। देवी के उठे हुए हाथ खाली हैं और अन्दर की ओर झुके हैं, देवी पौधे का एक हार पहनती हैं और एक जवाहरात की बनी एक करधनी। पट्टिका चौकोर है जो कि बड़ौदा के यम0यस0 विश्वविद्यालय के प्राचीन पुरातत्व विभाग में रखी गयी है। सोनवाने एलिफेंटा के मातृ–देवी की मुड़ी हुई प्रतिमा को उसी स्थान पर पायी गयी अर्द्धनारीश्वर प्रतिमा से तुलना करके इस पट्टिका की

तिथि छठीं शताब्दी ई0 मानी है। तारसंग की प्रतिमा एलिफेंटा की देवी की तरह सतह पर पायी गयी है।

बहुचित्रित पट्टिका में प्रारूप–2 की कमलयुक्त मातृ–देवी

प्रारूप–2 की कमल शीर्षयुक्त मातृ–देवी की बहुचित्रित पट्टिका नागपुर जिले के मंधल स्थल से प्राप्त की गयी है, जो अब नागपुर के केन्द्रीय म्यूजियम में है (चित्र–91)।[12] इस प्रतिमा के बायीं तरफ एक शेर का छोटा चेहरा है और दाहिने तरफ छोटा झुका हुआ साड़ है और सुदूर दाहिने तरफ एक विशालकाय भक्त का अंकन है किन्तु यह स्पष्ट नहीं है कि स्त्री है या पुरुष लिंग वाला भक्त है, जिसके हाथ आराधना की मुद्रा में है। इसकी तिथि 4थी–5वीं शताब्दी ई0 हो सकती है।

प्रारूप–2 की कमल शीर्षयुक्त मातृ–देवी की बहुचित्रित पट्टिका जो कि महाराष्ट्रीयन पत्थर पर उकेरी गयी है वह नागपुर के शहरी क्षेत्र महुरझारी से मिली है। इस प्रतिमा के दाहिनी तरफ एक साड़ है, बायीं तरफ एक भक्त है, और प्रतिमा के ऊपर विशालकाय कमलवत सिर के दोनों तरफ कमल का फूल है (चित्र–92)। प्रतिमा का निचला हिस्सा क्षत–विक्षत है।[13]

प्रारूप–2 की कमल शीर्षयुक्त मातृ–देवी की बहुचित्रित पट्टिका की सूचना 4वीं सूची मध्य–प्रदेश के सिवनी जनपद से मिलती है।[14] यह चार इंच चतुर्भुज पट्टिका है (चित्र–98)। इस प्रतिमा के उत्तानपाद पैर के ठीक दाहिने तरफ एक साड़ है और बाँयी तरफ आराधना करते हुए भक्त हैं प्रतिमा अपने वक्षों के बीच हार पहने हैं, जो कि कमल के फूल के डंठल की तरफ दिखायी पड़ता है।

गुजरात के भावनगर जनपद के बलभीपुर स्थल से प्राप्त मातृ–देवी की प्रारूप–4 की प्रतिमा (चित्र–87) भी बड़ौदा के यम0यस0 विश्वविद्यालय के पुरातात्विक विभाग में रखी

गयी है। काली हरी पतली पट्टिका की लम्बाई 2 इंच, चौड़ाई 4.5 इंच है। मानव सरयुक्त देवी लम्बे डंठल के साथ कमल की कलियों को पकड़े है, डंठल प्रभावशाली ढंग से देवी के सर से कन्धों की ओर मुड़ा है। देवी के दाहिने तरफ सांड़ है और बायीं तरफ आराधना की मुद्रा में भक्त। टारसंग की मूर्ति से तुलना करके बलभीपुर की इस अंकन की तिथि का निर्धारण 7 वीं शताब्दी ई0 किया जा सकता है। सोनवाने ने गुजरात के भावनगर जनपद के रनडेलिया नामक स्थान से तीन अन्य मातृ–देवी प्रारूप–4 के अंकन की सूचना दी है (चित्र–88) जो कि बहुत घिसा हुआ टुकड़ा है, गधाली भावनगर जनपद गुजरात (चित्र–89) से सांड़ के साथ भक्त और सतहल अहमदाबाद जनपद गुजरात (चित्र–90) से सांड़ के साथ भक्त का अंकन मिलता है, सभी अंकन बड़ोदा के यम0यस0 विश्वविद्यालय के पुरातत्व विभाग में सुरक्षित हैं।

मातृ–देवी की प्रारूप–4 आकृति बहुधा अकेले मिलने की अपेक्षा समुदाय में मिलती है, जबकि प्रारूप–1 की आकृति सदैव अकेले मिलती है। बढ़गाँव से प्राप्त प्रतिमा का उदाहरण एकमात्र अपवाद है, जहाँ वह सांड़ के साथ जुड़ी है।

प्रारूप–2 की कमल शीर्षयुक्त, भुजाविहीन मातृ–देवी की बहुचित्रित पट्टिका नागपुर जिले के मनसार नामक स्थान से मिली है। इस प्रतिमा के बाँयी तरफ कोई भक्त नहीं और दाहिने तरफ एक सांड़ है। यह पट्टिका नागपुर के केन्द्रीय म्यूजियम में सुरक्षित है (नं0सी0 203) यह लाल रेतीला पत्थर है (चित्र 93)। इसी तरह के दो और उदाहरण महाराष्ट्र के वर्द्धा जनपद के पौनार स्थल से मिले हैं (चित्र–94–95)। दोनों में साड़ मातृ–देवी के दाहिने तरफ स्थित है, दोनों में मातृ–देवी के बायी तरफ कोई भक्त नहीं है, और दोनों में मातृ–देवी के सिर के बायीं ओर दायीं तरफ कमल है। ये नागपुर में व्यक्तिगत संग्रह में है। सी0 गुप्ता द्वारा इनकी तस्वीरें प्रकाशित की गयी हैं।[15]

प्रारूप–2 की कमल शीर्षयुक्त, भुजाविहीन मातृ–देवी की बहुचित्रित क्षत–विक्षत पट्टिका तेर से मिली है (चित्र–97)। यह पट्टिका तेर म्युजियम में सुरक्षित है (न0 9.168) जो सम्भवतया नैसर्गिक रूप से कीसरगुप्ता की तरह है। प्रतिमा के दाहिने तरफ साड़ लिंग के सामने स्थित है। जबकि भक्त और शेर का चेहरा प्रतिमा के बायें छोर पर क्षत–विक्षत है। मातृ–देवी की लाल रेतीले पत्थर की यह प्रतिमा–2 इंच लम्बे और 2.25 इंच चौड़ी है। वह कमल का हार और करधनी, पैरों में हाथ का बुना हुआ कपड़ा पहनती है।

बहुचित्रित पट्टिका में प्रारूप–3 की कमलयुक्त मातृ–देवी

बहुचित्रित पट्टिका में प्रारूप–3 की कमल शीर्षयुक्त मातृ–देवी की प्रतिमा महाराष्ट्र के तेर स्थल में चार मिली है, जो विविध प्रकार की है और कर्नाटक के बेलगॉम जनपद की हुक्केरी ताल्लुक के मजाती स्थल से प्रारूप–3 मातृ–देवी की एक पट्टिका मिली है (चित्र–99–102)। सुन्दरा महोदय मजाती की इस पट्टिका की तिथि 7 वीं से 8 वीं शताब्दी ई0 निर्धारित करते हैं।[16] तेर से प्राप्त चार विविध प्रकार की पट्टिका में देवी कमल के स्थान पर अपने हाथों में पत्तियों को पकड़े हुए हैं। देवी कंगन, हार, पायजेब, बाजूबन्द, करधनी और नैरों में कपड़ा पहनती है, देवी पतली कमर वाली है। देवी के बायीं तरफ स्त्री या पुरूष का अंकन है। चारो प्रतिमाओं के चोटी के एक छोर से दूसरे छोर तक बायें तरफ से दाहिने तरफ तक एक लिंग साड़ और शेर का चेहरा है। मजाती पट्टिका जो एक बड़ी पट्टिका है (चित्र 102) यह कीर्तिमुख शेर देवी का वाहन या नरसिंहविष्णु का प्रस्तुतिकरण है।[17] मजाती पट्टिका में देवी के ऊपर जल का प्रतीक उपजाउपन का द्योतक है। मजाती पट्टिका एक मात्र उदाहरण है जिसमें मातृ–देवी का सम्बन्ध शिव से है। तेर के उदाहरणों में (चित्र 99–100–101) देवी अपने दोनों हाथों में पत्तियाँ पकड़ी हुई हैं न कि कमल, देवी

के हाथ में पत्तियों का सम्बन्ध मूर्ति सम्बन्धी साकम्भरी से है साकम्भरी आदि बंगाल में प्रसिद्ध वनस्पत देवी हैं।

आई0के0 शर्मा मातृ–देवी प्रारूप–3 के 3–3/4 इंच व्यास वाली पत्थर की पट्टिका के सम्बन्ध में रोचक सूचना दी है, दूसरी अन्य (चित्र 103) आन्ध्र प्रदेश के केसर गुप्ता स्थल पर शिव मन्दिर की खुदाई में पायी गयी जो चतुर्थ शताब्दी ई0 की है, इसमें एक मिट्टी के बर्तन को 6 महिलायें पकड़े हुए हैं। एक मानव का ढाचा निकट ही दबा पाया गया।[18] ये जोड़ा सुझाव देता है कि धार्मिक कार्यों में छोटे सुसज्जित पट्टिका का प्रयोग होता था। इस छोटे पट्टिका में देवी अपने हाथों में कमल के स्थान पर लिंग को पकड़ती है (दायी तरफ) और शेर का चेहरा (बायी तरफ) जबकि दोनों तरफ नीचे सॉड़ है, (दायी तरफ) (बायी तरफ) देवी का सामना करते हुए भक्त है, पूजा के रूप में भोजन के काटोर के साथ देवी का कमलवत सिर शेर के चेहरे और लिंग के साथ पंक्तिबद्ध है। देवी यहाँ शैवमत के लक्षणों से युक्त है। देवी एक कौपीन लुंगी पहनती हैं और उनका पाँव कमल के फूल पर आश्रित है। देवी अपने हाथों में शिव और शक्ति का सन्तुलन बनाती है, शिव का वाहन बैल और देवी का वाहन शेर है। केसर गुप्ता, तेर के समान है (चित्र–97) लेकिन तेर के उदाहरण में मातृ–देवी भुजाविहीन है।

अनैसर्गिक प्रकार के अन्य अनेक बहुचित्रितों का प्रस्तुतिकरण

दरसी से प्राप्त दो बहुचित्रित पट्टिका जिसमें प्रारूप–2 कमलवत सिरयुक्त देवी (चित्र–104–105) विशिष्ट रूप से महाराष्ट्रीयन भुजाविहीन प्रारूप के केन्द्र पर है।[19] देवी उत्तानपाद मुद्रा में सिंहासन पर आसीन प्रतीत होती है। इसी तरह की प्रतिमा कौशाम्बी से प्राप्त प्रतिमा है (चित्र–21) जो इस समय कलकत्ता म्यूजियम में रखी हुई है। देवी के बायी तरफ हाथ में त्रिशूल के साथ एक पुरुष की खड़ी आकृति अंकित है। उसके बायी

तरफ एक शेर है, जिसके बैठने की मुद्रा ठीक देवी की तरह है। उसके दाहिने तरफ झुके हुए साड़ के साथ शिवलिंग है उसके बगल में शिवलिंग के आगे ब्रह्मा अंकित है। कुनीडेन (चित्र–106) और उप्पालपादु (चित्र–107) की बहुचित्रित पट्टिका पर चित्रों की ऐसी ही व्यवस्था पायी जाती है और उप्पालपादु पट्टिका तीसरी से चौथी शताब्दी ई0 के बीच के काल की है।[20] कुनिडेन पट्टिका चौथी से पाँचवीं शताब्दी ई0 के बीच की है।

दारिसी उप्पालापादु और कुनिडेन के उदाहरणों में बैठा हुआ शेर कुन्डा मोतु से प्राप्त चतुर्थ शताब्दी की प्रसिद्ध त्रिकोणीय चूने के पत्थर से बनी बहुचित्रित पट्टिका की याद दिलाता है जो अब आन्ध्र प्रदेश के हैदराबाद के पुरातत्व संग्रहालय में है।

ये बहुचित्रित पट्टिकायें केन्द्रीय क्षेत्र में देवियों के प्रभाव को व्यक्त करती हैं। इन पट्टिकाओं में देवी के बायी तरफ जो पुरूष है वह शिव और पार्वती के पुत्र कार्तिकेय हो सकते हैं। बहुचित्रित पट्टिका में युवा पुरुष भाला या त्रिशूल पकड़े हुए हैं। जो भगवान कार्तिकेय को प्रमाणित करते हैं लेकिन कार्तिकेय या भक्त के रूप में पुरूष का परिचय अभी अनिश्चित है। भुवनेश्वर उड़ीसा सप्त्रगनेश्वर मन्दिर के प्रवेश द्वार पर शिव और पार्वती या हर और गौरी (चित्र–108) के चित्र उकेरे गये हैं।[21] पार्वती कमल की बाली पहने हैं शिव कमल का फूल पकड़े हैं और एक सर्प शिव के दाहिने कन्धे पर दिखायी पड़ता है। पार्वती की संरक्षिका एक महिला दासी है। इस जोड़े के दोनों तरफ एक पुरूष हाथ में त्रिशूल पकड़े खड़ा है। पार्वती के नीचे शेर के मुखौटे को दो आकृतियाँ अराधना कर रहे हैं, और शिव के नीचे साड़ उसी तरह पूजा कर रहा है। इस सन्दर्भ में शेर का चेहरा नरसिंह, विष्णु या कीर्तिमुख की तरफ सुझाव देती प्रतीत नहीं होती बल्कि इसके स्थान पर देवी की सवारी शेर के रूप में प्रमाणित होनी चाहिए यद्यपि डोनाल्डसन शेर और साड़ की व्याख्या हर और पार्वती की सवारी मानते हैं।[22]

केन्द्रीय चित्रित पत्रिका के समरूप मण्डप में दोनों तरफ एक–एक महिला ऐसे अंकित है मानो वह दर्पण में अपनी प्रशंसा कर रही हो, जबकि दूसरी का अंकन उसकी विनम्रता को प्रदर्शित करता है जो गौरी के मातृ रूप को मुखर करता है। डोनाल्डसन यह कहते हैं कि चबूतरे का प्रबल आधार का मेल विपरीत है, अर्थात पुरूष और महिला एकता का सिद्धान्त इन दोनों महिलाओं के परे है, लिंग का मन्दिर बायीं तरफ मन्दिर स्थापत्य में इनकी स्थिति तथा अंकन से स्पष्ट होता है कि यह हर और गौरी को समर्पित है जो शिव और पार्वती को समर्पित है यह बहुचित्रित पट्टिका सत्रु घनेश्वर मन्दिर में ढाले गये हैं जो कि बहुचित्रित पट्टिका के तत्व के लिए एक विलक्षण घटना प्रतीत होते हैं अन्यथा महाराष्ट्र और आन्ध्रा से मातृ–देवी की बहुसंख्यक, बहुचित्रित पट्टिका उन पायी गयी पट्टिकाओं के कितनी समझप दिखायी पड़ती हैं। मातृ–देवी प्रतिमा में शिव और पार्वती का संघ लिंग और योनि या हर और गौरी इस उड़ीसा मन्दिर पर अलग–अलग उल्लिखित है यह महत्वपूर्ण है कि उड़ीसा से हमें मातृ–देवी के जिन चारों प्रारूपों में से किसी का भी ज्ञान नहीं होता किन्तु ऐसा लगता है कि इस अकेले मन्दिर में उसका अंकन है डोनाल्डसन ने भुवनेश्वर परशुरामेश्वर, तन्गिशेशरेश्वर तथा राजा तथा रानी मन्दिर से कुछ सामग्री प्रकाशित की है जो तांत्रिकों से सम्बन्धित है किन्तु जो मातृ–देवी अंकन नहीं माना जा सकता यह तंत्र से सम्बद्ध मातृका अंकन है।

आन्ध्र प्रदेश में पेड्डामूडियम में पायी गयी बहुचित्रित पट्टिका में देवताओं की पंक्ति जिसमें बायीं से दांयी ओर गणेश, ब्रह्मा, नरसिंह, लिंग, देवी, विष्णु और नन्दी के साथ उमामहेश्वर भी सम्मिलित हैं। लक्ष्मी जैसी कि मानव सिरयुक्त श्रीवत्स, महिसासुर मर्दी युक्त श्रीवत्स दो सेवा में समर्पित हाथ उसी तरह उठे हैं जैसे आराधना करते हुए भक्त (चित्र–126 और 127) जैसा सती के अंकनों में मिलता है इन्हें चौथी से सातवीं शताब्दी

ई0 का माना गया है। इसमें श्रीवत्स का महत्व है तथा मातृ–देवी का न होना भी उल्लेखनीय है।

प्रारम्भिक आठवीं शताब्दी में कर्नाटक के ऐहोल स्थल पर चालुक्यों द्वारा बनाये गये हुच्चीमल्ली मन्दिर के निकट तालाब के किनारे पत्थर के एक विशालकाय टुकड़े पर कमलशीर्ष युक्त प्रारूप–3 मातृ–देवी उकेरी गयी हैं। इस विशालकाय पट्टिका पर बाँये से दाँये एक नेवला, पेड़ पर एक बन्दर, देवी, बैल या भैस पर चढ़ता आदमी और एक छाता वाहक जुलूस का नेतृत्व करता हुआ व्यक्ति अंकित है (चित्र–109) तालाब जो प्रारम्भिक मन्दिर के साथ जोड़ा गया है वह आठवीं शताब्दी ई0 के अन्तिम चरण में राष्ट्रकूटों द्वारा बनवाया गया हैं इनका एक समूह में अंकन स्पष्ट नहीं है स्थानीय स्तर पर सम्भवतः मातृ–देवी की कोई गाथा रही हो जो ज्ञात नहीं यह टुकड़ा अब ऐहोल के म्यूजियम में सुरक्षित है अनेक मातृ–देवी के अंकनों की तरह यह तालाब के बने मन्दिर का मूल रूप से हिस्सा रहा होगा जो बाद में तालाब के दीवार पर लगाया गया यदि इस अंकन का पूरा ज्ञान हो सके तो इसके बाद की सम्भावना है कि मातृ–देवी के विषय में महत्वपूर्ण सूचना सामने आये।

बहुचित्रित पट्टिकाओं में मातृ–देवी प्रतिमा के चारों तरफ निश्चित प्रतिमाओं की व्यवस्था, तौर तरीकों का साक्ष्य देती है इसलिए सबसे ज्यादा स्तरीय साड़, शेर, लिंग, आराधना करते भक्त हैं या संरक्षक है। मातृ–देवी की प्रतिमा के सभी स्थायी मूर्तियाँ शैव मन्दिरों से सम्बन्धित जान पड़ते हैं। लगभग चौथी शताब्दी ई0 तक मातृ–देवी हिन्दू देवमंडा में शिव की शक्ति के रूप में स्वीकृत हो गयी थी।

मातृ–देवी की बहुचित्रित पट्टिकाओं के संघ का साक्ष्य आन्ध्र प्रदेश के क्षेत्रों के बड़े पैमाने पर मिले हैं। भारत में अन्यत्र इसका कम विस्तार है। मातृ–देवी शिव से जुड़ी है,

मातृ–देवी का सिर या तो कमल है या मानवीय सिर, देवी के उत्तानपाद की मुद्रा कुछ मूर्तियों में ही है। कभी–कभी उनका अंकन कटि प्रदेश पर कपड़े के साथ भी मिलता है। मातृ–देवी का अंकन अन्य देवताओं के आकार के समान मिलता है। इन अंकनों से यह स्पष्ट है कि कम से कम दक्षिण भारत के हिन्दू देव मण्डल में मातृ–देवी का स्तर ऊपर उठ गया और उसने महत्वपूर्ण स्थान प्राप्त किया।

ऐसा लगता है मानो कोई पूर्ववर्ती ग्राम देवी अथवा एक ग्राम देवता धीरे–धीरे हिन्दू देव मण्डल में प्रवेश कर गया। ऐसा होना कोई विलक्षण भी नहीं चूँकि ऐसा पहले भी होता रहा है यह भी आश्चर्य की बात नहीं है कि उसका उच्च स्थान बहुत कम समय रहा हो।[23] यह महत्वपूर्ण है कि दूसरी से चौथी शताब्दी ई0 अर्थात दो शताब्दियों तक जब उसे दूसरे नामों से पुकारा जाता था किन्तु मातृ–देवी नहीं तो उसका स्वतन्त्र अस्तित्व था।

मातृ–देवी की प्रतिमा आठवीं शताब्दी ई0 के बाद यदा–कदा बनायी गयी और प्रत्यक्षतः 12वीं शताब्दी के बाद में भारत में नहीं बनायी गयी सिवाय नकल के प्रमाण जो हाल ही में लिये गये। यद्यपि कुछ प्राचीन प्रतिमाओं की आराधना आज भी प्रचलित है।

नोट्स

1. बग्रेस, 1981 रीप्रिन्ट।

2. धेरे, 1978, 55।

3. द अर्लियस्ट मेन्सन आफ द नेम इलापुरा इज मेड इन ए चालुक्य कापरप्लेट ग्रान्ट आफ ए0डी0 704, हरन चन्द्र चकलदर, ''इलापुरा ग्रान्ट आफ वेस्टर्न सालुक्य विजयदित्या सक संवत 626,'' इण्डियन हिस्टोरिकल क्वाटरली 4, 1928, 425–30।

4. स्पीक, 1967, 11–22, एण्ड 1983, 235–84।

5. गोरकसेकर, 1982, 2–3। इट इज केप्ट इन द प्रिन्स आफ वाल्स म्यूजियम, नं0 8117/1।

6. शाह, 1955–56, पीयल0 41, फीगर 10।

7. सोनवाने, 1986।

8. वोरा एण्ड पालान, 1971, 357–58, फीगर 10।

9. चास्टोक, 1980, फीगर 171, डीसकस्ड इन रीलेसन टू द पोज आफ द फीमेल आन ऐन इंडस सील एण्ड फीमेल एज सोर्स आफ आल बीइंग, 128 : सोनवाने, 1986; वोरा एण्ड पालान, 1971, फीगर 51 आल डेट इट बाइ स्टाइल टू द सेवेन्थ सेन्चुरी।

10. आर0सी0 अग्रवाल, 1972, 351।

11. सोनवाने, 1986।

12. मुले, 1979, 187–89। आल्सो इण्डियन आर्कियोलाजी : ए रीव्यू 1969–70, पीयल0 64, नं0 बी। मुले रेफर्स टू द लायन फेस एज किर्तिमुख, इट सीम्स मोर लाइकली टू द शक्ति वाहन। आल्सो सी0 गुप्ता, 1981, 145; तिवारी, 1985, फीगर, 14।

13. धेरे, 1978, फीगर 27, नं0 23।

14. सोथेबाइ पार्क बर्नेट, ''खेर, थाई, इण्डियन एण्ड हिमालयन वर्कस आफ आर्ट,'' लन्दन, 15 जून 1987, लाट 244, नाउ इलिंगबर्ग कलेक्सन, लन्दन।

15. सी0 गुप्ता, 1987।

16. ए0 सुन्दरा, 1979।

17. सी0 गुप्ता, 1987, इन रेफरेन्स टू ए प्लाक फ्राम मंधल, बीलीव्स इट इज नाट किर्तिमुख, बट ए लायन आर टाइगर हेड।

18. सर्मा, 1987।

19. अनपब्लिस्ड। दारसी इन प्रकाशन डिस्ट्रक्ट आफ आन्ध्र–प्रदेश। वन इक्जाम्पल मीजर्स 12.5 बाई 5 इंचेज इन द नेल्लोर म्यूजियम, ग्रीन लाइम स्टोन, सी0 फोर्थ टू फिफ्थ सेन्चुरी : सेकेन्ड इमेज मीजरिंग 10.5 बाइ 5 इंचेज इज केप्ट डायरेक्टर आफिस, आन्ध्र–प्रदेश स्टेट डायरेक्टरेट आफ आर्कियोलाजी एण्ड म्यूजियम्स, हैदराबाद, आल्सो ग्रीन लाइमस्टोन।

20. कुनीडेन प्लाक मीजर्स 10.5 बाइ 7.5 इंचेज। पब्लिस्डः सिवराममूर्ति, 1957, 1979, फीगर 41, 1982, फीगर 48; शास्त्री, 1967–68, 16–22; प्रसाद, 1980, 68–69। उप्पालपाडु पब्लिस्ड शिवराममूर्ति, 1979, फीगर 41, 1982, फीगर 48।

21. डोनाल्डसन, 1985, फीगर्स 12, 17, डेस्क्राइब्ड 36।

22. डोनाल्डसन, 1985, 36।

23. इचमैन, 1978।